गोवा विश्वविद्यालय

शणै गोंयबाब भाषा और साहित्य महाशाला

हिंदी अध्ययन शाखा

नवर्शे गांव का सर्वेक्षण रपट

नावशी

13/20

नाम : पूर्वा नाईक फातर्पेकर

कक्षा : एम. ए. (भाग १)

विषय : HIN-528

विषय शीर्षक: भाषा और साहित्य: समाजिक एवं सांस्कृतिक सर्वेक्षण

मार्गदर्शक : प्रा. श्वेता गोवेकर

GOA UNIVERSITY
TALEIGAO
PLATEAU
GOA

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय
१.	प्रस्तावना
२.	सर्वेक्षण क्या है?
३.	नवशे गांव का सर्वेक्षण रपट
४.	हिंदी भाषा का ज्ञान
५.	सांस्कृतिक जीवन
६.	समाजिक समस्याएं
७.	निष्कर्ष

प्रस्तावना

हमारे पाठ्यक्रम के अंतर्गत सामाजिक सर्वेक्षण यह विषय रखा गया है। जो हमारे लिए एक अनूठा अनुभव था। क्योंकि पहली बार ऐसा विषय हमारे पाठ्यक्रम में था, जिससे की हमे कक्षा में बैठकर, किताबों से ज्ञान प्राप्त करने के बजाय, व्यावहारिक रूप से घूमकर अनुभव करने का अवसर मिला।

इस सर्वेक्षण के लिए हमने "नवशें" नामक गांव का चयन किया। वहां जाकर हमने ग्रामीण जीवन की बारीकियों को नजदीक से देखा। लोगों से बातचीत करके उनके जीवन, आचार-विचार, संस्कृति, रीति-रिवाजों और उनकी समस्याओं को समझने का प्रयास किया।

यह अनुभव हमारे लिए अत्यंत मूल्यवान रहा। आज के व्यस्त जीवन में, जहाँ हम अक्सर दूसरों से दूर रहते हैं, इस विषय ने हमें उनके जीवन, उनके दुःख-दर्द को प्रत्यक्ष रूप से महसूस करने का अवसर प्रदान किया।

अनजान लोगां के मध्य जाकर उनकी जानकारी प्राप्त करना आसान नहीं था। एक तरफ दिल में उमंग थी कि नया कुछ सीखने के लिए मिलेगा तो दूसरी तरफ डर सता रहा था। मन में अनेकों प्रश्न खलबली मचा रहे थे। क्या वह लोग हमारे प्रश्नों का उत्तर देंगे? क्या वे हमसे अच्छे से पेश आयेंगे? क्या हम उनका विश्वास जीतने में कामयाब होंगे? ऐसेही अनगिनत प्रश्न मन को सता रहे थे। हमारे पास समय भी कम था और काम ज्यादा। केवल दो दिन में हमे हमारा सर्वेक्षण पूरा

करना था। इसलिए मन में ढेर सारी शक्ति जुटाकर अपने इस कार्य में लग गये।

हम सब ४ अप्रैल २०२४, सुबह के १० बजे नवशें गांव पहुंचे जो की हमारी युनिवर्सिटी से ५ मिनिट की दूरी पर था। अप्रैल महीने की वह कड़कती धूप और गर्मी में हमनें घर घर जाकर लोगों से जानकारी लेने की शुरुवात की।

पहले घर में हमने प्रवेश किया और अपना परिचय देते हुऐ ऐसे प्रश्न पूछकर सुरुवात की जिससे हम उनका विश्वास संपन्न कर सकते है। फिर तैयार की गयी प्रश्नावली से उनको एक के बाद एक प्रश्न पूछते गये। इस प्रकार मन का वह डर गायब सा हो गया। एक आत्मविश्वास मन में जागृत हुआ कि हॉ, हम इस कार्य को कर सकते हैं।

हमारा सर्वेक्षण पूरा करने के लिए हमें बहुत से पापड़ बेलने पड़े। क्योंकि जब हमने नवशें गांव में सर्वेक्षण की शुरुआत की तब इलेक्शन का समय था और कोड ऑफ़ कंडक्ट लग गया था। इसलिए बहुत से लोगों को ऐसा लगा कि हम इलेक्शन के संदर्भ में उनसे बातचीत करने आए हैं। तो हमने उनकी यह गलतफहमी दूर की। हमने उनसे कहा की ऐसा नहीं है, हम यूनिवर्सिटी के बच्चे हैं और सिर्फ यहां हमारे पाठ्यक्रम के खातिर गांव का सर्वेक्षण करने के लिए यहां आए हैं।

नवशें गांव में सर्वेक्षण का अनुभव हमारे लिए अनेक चुनौतियों और सीखों से भरा रहा।

कुछ लोगों से जानकारी प्राप्त करना मुश्किल था। क्योंकि उन लोगों के पास गांव के बारे में बताने के लिए खास जानकारी नहीं थी। कुछ घरों में ताला लगा हुआ था या सिर्फ बच्चे मिले जिनके माता-पिता काम पर गए थे। ऐसे भी लोग मिले जो बातचीत करने में सहज नहीं थे। हमारे कुछ छात्रों के पीछे आवारा कुत्ते तक दौड़ते हुए आये। इन चुनौतियों ने हमारे लिए जानकारी इकट्ठा करना मुश्किल बना दिया। लेकिन हमने हार नहीं मानी। हमने एक दूसरे का हौसला बढ़ाया और प्रोत्साहित किया। कुछ लोगों ने हमें अपने घरों में बुलाया, तो कुछ ने धूप में खड़े होकर ही जानकारी दी। कुछ ग्रामीणों ने हमारी मदद भी की और हमें उन लोगों के घरों तक ले गए जो गांव के बारे में अच्छी जानकारी रखते थे। इन लोगों से हमें गांव के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिली। जैसे की गांव की लोक संस्कृति, सामाजिक समस्याएं, अर्थव्यवस्था, शिक्षा आदि।

एक घर हमें ऐसा मिला जहां उन्होंने हमें अच्छा स्वागत महसूस कराया। वह घर 'वासु काणकोंणकर' जी का था। उन्होंने ने हमें अपने घर में न केवल बिठाया, बल्कि ताज़े तरबूज भी खिलाए। और हमारे प्रश्नों का उत्तर विस्तार से और सटीक जानकारी प्रदान करते हुए दिया। उन्होंने एक पुस्तक में गांव के लोक त्योहारों के गीत संग्रहित करके रखे थे वह हमें प्रदान किए, जो हमारे सर्वेक्षण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण बने। यही नहीं 'वासु' जी ने वॉट्सएप के माध्यम से हमे गांव के सांस्कृतिक कार्यक्रमों के वीडियो और तस्वीरें भी भेजीं, जिससे हमें गांव की संस्कृति और परंपराओं को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिली।

इस प्रकार नवशें गांव के सर्वेक्षण का अनुभव हमारे लिए अत्यंत शिक्षाप्रद रहा। इस दौरान हमने अनेक नवीन अनुभव प्राप्त किए और बहुमूल्य ज्ञान अर्जित किया। लोगों से कैसे बातचीत करनी चाहिए, कैसे संयम बनाए रखना चाहिए, और परिस्थिति के अनुसार अपनी वाणी को कैसे ढालना चाहिए, यह हमने सीखा। हमने यह भी समझा कि दूसरों के प्रति क्रोधित होने की बजाय शांतिपूर्वक कार्य करना कितना महत्वपूर्ण है। इस अनुभव ने हमें इतना आत्मविश्वास प्रदान किया है कि अगर भविष्य में भी कुछ ऐसे कार्य करना पड़े तो हम अवश्य सफलतापूर्वक निर्वहन कर सकेंगे।

इस तरह हमने हमारी प्राध्यापिका 'श्वेता गोवेकर' जी के मार्गदर्शन से नवशें गांव के सर्वेक्षण के कार्य को पूरा किया।

सर्वेक्षण क्या है?

सर्वेक्षण का अर्थ

सर्वेक्षण शब्द अंग्रेजी भाषा के सर्वे शब्द का हिंदी रुपान्तर है, अंग्रेजी शब्द सर्वे फ्रेंच भाषा के 'सुर'और लैटिन भाषा के 'वियर' दो शब्दों से मिलकर बना है। 'सुर'का अर्थ ऊपर (ओवर) तथा 'वियर' का अर्थ देखना (टू सी) है, इस प्रकार सर्वेक्षण का शाब्दिक अर्थ है ऊपर तौर पर देखना। सर्वेक्षण का अर्थ किसी घटना अथवा स्थिति को बाहर से देखना या अवलोकन करना है।

किसी विशेष प्रयोजन हेतु सूक्ष्म रूप से देखने, परखने अथवा निरीक्षण करने की प्रक्रिया को सर्वेक्षण कहते हैं। या एक समुदाय के संपूर्ण जीवन या उसके किसी एक पक्ष जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य आदि में व्यवस्थित, क्रमबद्ध व विस्तृत तथ्यों के संकलन तथा विश्लेषण को ही सर्वेक्षण कहते हैं।

सर्वेक्षण कई प्रकार के होते हैं जैसे कि सामाजिक सर्वेक्षण, आर्थिक सर्वेक्षण, जनसंख्या सर्वेक्षण आदि।

समाजिक सर्वेक्षणं

सामाजिक सर्वेक्षण के अंतर्गत एक निश्चित क्षेत्र को चुना जाता है तथा उसे क्षेत्र से संबंधित सामाजिक राजनीतिक ऐतिहासिक सांस्कृतिक आदि जानकारी प्राप्त की जाती है।

सर्वेक्षण के क्षेत्र का चुनाव करने के पश्चात सर्वेक्षण कार्यक्रम का संचालन आवश्यक है। इस हेतु हमने प्रश्नावली उपकरण का चुनाव किया इस प्रश्नावली का निर्णय इस प्रकार किया गया था कि जिससे हमारे सर्वेक्षण का उद्‌देश्य पूरा हो सके यह प्रश्न निम्नलिखित आधार पर है।

- घर के प्रमुख सदस्य का नाम
- घर के अन्य सदस्यों के नाम
- हिंदी भाषा के प्रति उनका ज्ञान
- सांस्कृतिक एवं आर्थिक स्थिति।
- गांव की समस्याएं।
- लोगों की अपेक्षाएं। आदि

नवशे गांव का सर्वेक्षण रपट

यह सर्वेक्षण नाव्शी गॉंव में किया गया था, जो गोवा विश्वविद्यालय द्वारा दत्तक लिया गया एक गॉंव है। अनुमानित रूप से 300 घरों और 400 निवासियों वाला यह गॉंव, समुद्र के किनारे स्थित है और अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए जाना जाता है।

गॉंव का जीवन:

गॉंव के अधिकांश लोग मछली पकड़ने का काम करते हैं। सुबह 5 बजे से 9 बजे तक वे समुद्र में जाते हैं और अपनी ताज़ी पकड़ वापस लाते हैं। कई लोग जाल बुनने का काम भी करते हैं। शिक्षा का स्तर कम होने के कारण, पहले लोग मछली पकड़ने जैसे व्यवसायों पर निर्भर थे। लेकिन आजकल, युवा पीढ़ी शिक्षित हो रही है और सरकारी नौकरियों में प्रवेश कर रही है।

जाति और भाषा:

गॉंव में बहुसंख्यक गावडा समुदाय के लोग रहते हैं, जो एक अनुसूचित जनजाति (एसटी) है। यहाँ हिंदी और मराठी कम बोली जाती हैं, लेकिन युवा पीढ़ी इन भाषाओं को सीख रही है।

आवास और सुविधाएं:

गॉव में ज्यादातर घर पक्के और सीमेंट से बने हैं। यहाँ विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जैसे शिगमो, होली, ढालो और जागोर। ध्यान देने योग्य बात यह है कि यहाँ पुरुष ढालो नृत्य करते हैं, जो अन्य जगहों से भिन्न है।

यातायात और शिक्षा:

गॉव में यातायात की सुविधा सीमित है। लोग अपनी निजी गाड़ियों का उपयोग करते हैं। गॉव में आंगनवाड़ी नहीं है, लेकिन शिक्षिकाएं बच्चों को उनके घरों में ही पढ़ाती हैं। निकटतम अस्पताल बाम्बोली में स्थित GMC अस्पताल है।

मुख्य मुद्दे:

गॉव के लोगों के लिए सबसे बड़ी चिंता मरीना बे परियोजना है, जिसे सरकार ने रोजगार के अवसरों को बढ़ाने के लिए शुरू किया था। गॉव के लोगों का मानना है कि यह परियोजना केवल एक दिखावा है, क्योंकि ग्रैंड हयात होटल के निर्माण के समय भी उन्हें रोजगार देने का वादा किया गया था, लेकिन उन्हें धोखा दिया गया था।

हिंदी भाषा का ज्ञान

भारत अपनी समृद्ध संस्कृति और विविधता के लिए जाना जाता है। इस अद्भुत विविधता को एक सूत्र में पिरोने का काम हमारी राष्ट्रभाषा हिंदी करती है। और हिंदी के छात्र होने के नाते, हमारे सर्वेक्षण का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य यह भी समझना था कि नवशीं गांव के लोग हिंदी भाषा से कितने परिचित हैं। हिंदी भाषा का कितना ज्ञान रखते हैं, वे इसे कितनी अच्छी तरह बोल और समझ पाते हैं, और उनकी इसमें कितनी रुचि है।

नवशें गांव के लोगों के हिंदी विषयक ज्ञान के बारे में बताया जाए तो, गांव के अधिकांश लोग हिंदी भाषा समझ लेते हैं। गांव के कुछ बुजुर्ग लोग ऐसे भी हैं जिन्हें हिंदी समझने में कठिनाई होती है। वहीं, कुछ अन्य बुजुर्ग है जो हिंदी को समझ तो सकते हैं, परंतु बोलने में असमर्थ हैं।

मध्यआयु के लोग हिंदी को बोल और समझ सकते हैं, परंतु उनका ज्ञान सीमित है। वे हिंदी को धाराप्रवाह नहीं बोल पाते हैं। यह सीमित ज्ञान मुख्य रूप से शिक्षा के अभाव के कारण है। अधिकांश ग्रामीणों ने अपनी शिक्षा आठवीं या नवीं कक्षा तक ही प्राप्त की है, वह भी अपनी मातृभाषा कोंकणी में, और कुछ ने मराठी में।

हालांकि, यह कहना गलत नहीं होगा कि नवशीं गांव के लोगों का हिंदी भाषा का ज्ञान गहन नहीं है। वे हिंदी को समझ और पढ़ सकते हैं, परंतु उनका हिंदी बोलने का कौशल अपेक्षाकृत कम विकसित है। इसका मुख्य

कारण शिक्षा का अभाव है। लेकिन गांव के युवा तथा बच्चों की बात की जाए, तो वे हिंदी भाषा को समझते भी हैं और बोल भी लेते हैं; तथा उन्हें हिंदी में लिखना भी आता है। ५वीं से १०वीं तक स्कूली शिक्षा में अनिवार्य रूप से हिंदी भाषा पढ़ाए जाने के कारण युवा पीढ़ी तथा बच्चो में हिंदी लिखने-पढ़ने की क्षमता विकसित हुई है।

इस गांव के कुछ लोगों का मानना यह है कि यदि वे थोड़ी बहुत हिंदी समझ और ब्रोल पाते भी हैं, तो इसका श्रेय हिंदी धारावाहिकों और फिल्मों को जाता है। उनका कहना है कि इन माध्यमों के निरंतर संपर्क ने उन्हें भाषा सीखने और समझने में मदद की है।

जब एक ग्रामीण से पूछा गया कि हिंदी भाषा का प्रयोग उन्हें ज़्यादातर कहां करना पड़ता है/ कहा करते है?, तो उन्होंने उत्तर देते हुए कहां "गोवा अब केवल गोवा वासियों का ही नहीं रहा है। ज़्यादातर लोग रोज़गार की तलाश में दूसरे राज्यों से गोवा आते हैं। इनमें से अधिकांश लोग यहीं बस जाते हैं और अपना व्यवसाय शुरू कर लेते हैं। जैसे आप इन लोगों को अनेक स्टेशनरी, मिठाई, कपड़ों आदि की दुकानों में देख सकते हैं; इनमें से ज़्यादातर लोग कोंकणी भाषा न तो समझते हैं और न ही बोल पाते हैं; भले ही उन्हें थोड़ी-बहुत कोंकणी आती हो, वे फिर भी बोलना पसंद नहीं करते। ऐसी स्थिति में, हिंदी भाषा ही हमारे बीच संवाद का माध्यम बन जाती है। इसके अतिरिक्त, जब कोई पर्यटक गोवा घूमने आते हैं और किसी स्थान या दिशा के बारे में पूछते हैं, तो उस समय भी हिंदी भाषा का ही प्रयोग करना पड़ता है।

सांस्कृतिक जीवन

गोवा के पारंपरिक लोक त्यौहार जैसे कि जागोर, धालो आदि इस गांव में मुख्यत मनाते हैं।

जागोर

जागोर पारंपरिक लोक नाट्य का एक रूप है जो पूरे समुदाय पर लोक देवता का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए प्रतिवर्ष किया जाता है जो पूरी तरह से लोक समर्थन और भागीदारी पर आधारित है। इस प्रकार का रंगमंच हास्य रूप में लोक मनोरंजन और धार्मिक अनुष्ठानों को जोड़ता है। जागोर उन गांवों में प्रतिवर्ष किया जाता है जहां नव-हिंदू (पुनर्धर्मित गावड़ा) बसे हुए हैं। इसका मूल उद्देश्य विभिन्न स्थानीय दिव्य शक्तियों की आत्माओं को जगाना है। इस नाट्य रूप के दिन पूरा गांव त्योहार की तरह जगमगा उठता है। जागोर का रात भर चलने वाला प्रदर्शन सुनिश्चित करता है कि साल में एक बार रात भर देवता जागते रहें। अंतर्निहित मान्यता यह है कि यदि देवी-देवताओं को एक बार जगाया जाता है, तो वे साल भर जागते रहेंगे और गांव की रक्षा करेंगे।

नवशें गांव में ज्यादतर गावड़ा समुदाय के लोग है। हालांकि नौशी शहरी केंद्रों के बहुत निकट है, फिर भी यहां रहने वाले गावड़ा समुदाय के लोगों ने लोककथाओं, लोकसंस्कृति से अपना जुड़ाव बनाए रखा है। जैसे की जागोर।

नवशें गांव एक झरने और झील से सुशोभित है। जागोर के दिन, 'जलमी' झील में घी का दीप जलाती है और फिर इस झील के जल को लाकर 'जलमी' के घर के गर्भगृह में रख दिया जाता है। इस दिन गांव के लोग मांसाहारी भोजन नहीं करते हैं और उत्साह के साथ सात्विक भोजन करते हैं। परंपरा के अनुसार, पूजा के लिए शुद्धता जरूरी मानी जाती है।

देवता का आह्वान करने के बाद, गांव के निवासी बड़े उत्साह के साथ नाटक की तैयारी करते हैं। सभी लोक कलाकार और ग्रामीण रात लगभग १० बजे गांव के एक पवित्र सामुदायिक स्थान पर अते है जीसे 'मांड' काहा जाता है। जो 'सतेरी केळबाई' मंदिर के पास है। और यहां आकर लोक देवता और अन्य देवताओं से सफल नाटक प्रस्तुति का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए प्रार्थना करते हैं।

जागोर का प्रदर्शन 'नमन' जैसे भक्ति गीतों के पाठ से शुरू होता है। यह नमन 1 घंटे तक गया जाता है। इस नमन गीत को 'आदीवन' कहते है, जिसमें लोक कलाकार विभिन्न देवी-देवताओं का आह्वान करते है।

आदीवन

आदीवन बाप्पा गा गणपती देवा

ब्रह्मदेव आनी विष्णू शंकरू ।।२।।

तिगूय मेळून गा एक दत्तगुरु ।।२।।

कृपा दिगा बाप्पा आदी अनंता ।।३।।
दत्तगुरु तुका नमन नमन, दत्तगुरु.....

नमन म्हजे गा सातेरी माते ।।२।।
आदिवाश्यांचे गे मूळ देवते ।।२।।
महाकाली महा शालिनी सते ।।२।।
बुद्धी सुबुध्दिचे विद्याधन दाते ।।३।।
सातेर मायें तुका नमन नमन.....

नमन म्हजें गा मुळाण्या गुरु ।।२।।
ताणें धरिला गा सर्वयांचे मूळ ।।२।।
ताणे घेतिला गा बेरो अवतार ।।२।।
तेच्या उपकारांत सगलो संवसार ।।३।।
गुरुदेव तुका नमन नमन .....

नमन म्हजें गा बसलेले सभेक ।।२।।
सभे मुखावयल्या सगल्या भोवसाक ॥२॥

जागरा मांडावयले रंग देवतेक ।।२।।

जागरा मांडावयले रंग देवतक ।।३।।

रंग देवते तुका.....

नमन म्हजें गा आदी समेस्तांक ।।२।।

वसुंधरे वयल्या देव दैवतांक ।।२।।

देव दैवतांक गा भागिवंतांक ।।२।।

ताणी वसयलेल्यां पवित्र थळांक ।।३।।

देव देवता तुमकां नमन नमन .....

नमन म्हजें गा देवकी पुता ।।२।।

चराचर तुज्या गा चरणा लागता ।।२।।

चरणा लागता गा पावन जाता ।।२।।

नाम मंत्र तुजो मुखी धरिता ।।३।।

देवकी पुता तुका नमन नमन .....

लोकमनात जेन्ना पडटा अंधकार ।।२।।

शिकवण दिवंक तेन्ना येता दत्तगुरु ।।२।।

नावांत तेच्या गावता धीर आदार ।।३।।

दत्तगुरु तुका नमन नमन .....

आदिबाप्पा गा तूं आदी परमेश्वर ।।२।।

तुवें निर्मिला गा सगलें चराचर ।।२।।

तुजें रूपणे गा निर्गुण निराकार ।।३।।

आदिबाप्पा तुका नमन नमन .....

इसके बाद कलाकारों का आगमन होता है जो अच्छे से सजे होते और लोक संगीत की धुन पर मंच पर आते हैं जिसे सवंग कहते है। प्रत्येक सवंग (पात्र) अपनी भूमिका के लिए सावधानीपूर्वक तैयार किया जाता है और यथासंभव यथार्थिक दिखने का प्रयास करता है।

जागोर के प्रदर्शन में सिर्फ पौराणिक कथाओं पर आधारित कहानी नहीं होती है बल्कि दैनिक घटनाओं के अनुभवों को रोचक तरीके से साझा किया जाता है। जिसमें मछली विक्रेताओं, फूल विक्रेताओं आदि जैसे साधारण लोगों को चित्रित करते हैं, जिनमें चोर, सड़कछाप रोमियो आदि भी शामिल हैं। और यही इस नाट्य रूप की प्रबल अपील है।

'निखंडार' (पुलिस कांस्टेबल) गांव की रक्षा करने वाला व्यक्ति होता है जो दो खड़ी तलवारें पकड़कर पैरों से बंधे बांस पर खड़ा होकर दिखाई देता है।

'परपती' गांव का राजस्व वसूलने वाले अधिकारी की भूमिका होती है। जिसका काम पुर्तगाली शासन से पहले कर वसूली करना था। पुर्तगाली संदर्भों में 'परपती' का उल्लेख है कि वह एक कर संग्रहकर्ता था। वह एक हाथ में तलवार और दूसरे हाथ में रुमाल लिए हुए दिखाई देता है।

निखंडार और परपती दो फीट ऊंचे लकड़ी के टुकड़े के साथ नाचते हैं जिन्हें कपड़े की रस्सी से उनके पैरों से बांधा जाता है। इससे यह दर्शाता है कि वे दोनों आम लोगों से ऊपर हैं।

'थोटो' एक लंगड़ा व्यक्ति की भूमिका निभाने वाला कलाकार होता है जो एक पैर में बांस बांधकर अपना शरीर संतुलित करते हुए नाचता है।

'गाराशेर' या 'तुर्मटी' एक छेड़खानी करने वाला सवंग (पात्र) है जो चुटकुले सुनाकर दर्शकों को हंसाते हैं। वह खास उत्साह के साथ नाचता है। इस नृत्य के बाद दो युवतियों के पात्र आते हैं जिनके पास यूरोपीय लोगों का प्रतिनिधित्व करने वाले चश्मे होते हैं। गाग़शेर इन लड़कियों को चिढ़ाता है। लड़कियां तब अपने पूर्ण पश्चिमी पोशाक में लाठी लेकर अपने गुस्से वाले यूरोपीय लोगों को बुलाती हैं। वह गाराशेर को जेल ले जाने की धमकी देता है। जागोर में कोई महिला भाग नहीं लेती है, सिर्फ पुरुष कलाकार ही महिलाओं की भूमिका निभाते हैं।

जागोर जो रात १० बजे शुरू होता है, लगभग दस घंटे तक चलता रहता है। पहले के समय में जब लोगों के लिए मनोरंजन का कोई आधुनिक साधन उपलब्ध नहीं था, तब जागोर जैसे लोक नाटक ग्रामीणों का मनोरंजन करते थे। जागोर पारंपरिक ग्राम जीवन के पहलुओं से संबंधित है। इसे आम तौर पर गोवा में आधुनिक रंगमंच के अग्रदूत के रूप में माना जाता है।

दिलचस्प बात यह है कि जागोर प्रदर्शनों ने सांप्रदायिक सद्भाव की भावना को बनाए रखा है। अतीत में, हिंदुओं के साथ-साथ ईसाई समुदाय के सदस्य भी इस नाटक के नृत्य, गायन में भाग लेते थे।

नवशें में एक पवित्र क्रॉस है। जो पुर्तगालियों ने हिंदू धर्म के लोगों को ईसाई धर्म में परिवर्तन कर उस क्रॉस को बनाया था। मंदिर बनने से पहले गांव में वही एकमात्र क्रॉस था जिस पर लोग अपनी आस्था रखते थे। इसलिए जगर के एक दिन पहले शाम को गांव के हिंदू ग्रामीण उस क्रॉस के पास जाते हैं और मोमबत्तियां जलाकर, फूलों की माला डालकर प्रार्थना करते हैं जिसे वह 'लदीन' कहते हैं। यह 'लदीन' गाने के लिए वह लोग नवशें गांव के बाहर से कुछ ईसाई लोगों को बुलाते है और यह कार्य सम्पन्न करते है। इस प्रकार, जागोर न केवल मनोरंजन का एक रूप है बल्कि यह समुदाय के धार्मिक जीवन से भी जुड़ा हुआ है।

जागोर की कुछ तस्वीसे

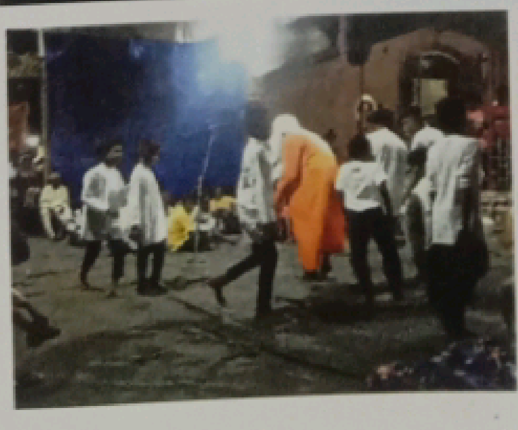

धालो

धालो नृत्य गोवा की एक लोक परंपरा है। जिसे आमतौर पर हर गांव में महिलाएं खेलती हैं। लेकिन नवशें गांव में धालो करने की एक अनोखी परंपरा है। इस गांव में महिलाओं की बजाय पुरुष धालो खेलते हैं। यह धालो नृत्य कला और अनुष्ठानों का ऐसा मिश्रण है जो सभी का ध्यान खींचता है।

यह उत्सव पूर्णिमा के दिन शुरू होता है जिसे स्थानीय रूप से "धालांची पुनाव" के नाम से जाना जाता है। हिंदू कैलेंडर के अनुसार यह त्योहार पौष महिने के दौरान आता है। जो ग्रेगोरियन कैलेंडर के हिसाब से जनवरी के महीने में आता है। धालो नृत्य का विषय मुख्य रूप से धार्मिक और सामाजिक होता है।

धालो रात के १० बजे से शुरू करते है और ११ से १२ बेज तक खत्म। यह धालो का प्रदर्शन एक पवित्र खुले स्थान पर होता है, जिसे 'मांड' (धालो मांड) कहा जाता है, जहां गांव के लोग अनुष्ठानिक प्रदर्शन के हिस्से के रूप में गाते, नाचते या संगीत बजाते हैं। उन दिनों लोगों को जूते पहनकर मांड पर प्रवेश करने की अनुमति नहीं होती है।

यह ध्यान रखना दिलचस्प है कि इस गांव में धालो के दौरान गाए जाने वाले नृत्य और गीत पारंपरिक होते हैं। इस गीत में ७ 'चाव' होती है जिसमें सिर्फ रामायण की कथा होती है। जैसे रावण द्वारा सीता का अपहरण कर लंका ले जाना इस कथा का वर्णन होता है। और थोड़ी महाभारत की भी कथा होती है।

ढोल गाड्याचे चावे' होते है, गडे नाच उड़के गोल चक्र में नाचते है और अपना घेरा पूरा करते है। जैसे गोवा का और एक सांस्कृतिक नृत्य है गोफ' उसीकी तरह यह प्रस्तुत करते है।

धालो खेलने के लिए कोई भी विषेश वेशभूषा या विशिष्ट वस्त्र पहनना नही होता है। गांव के पुरुष, लड़के अपने हिसाब से समान्य कपड़े पहनकर आते है।

लड़कियां धालो में भाग ले सकती है जिनकी उम्र १० साल तक की हो। लेकिन जैसे ही वह ११ उम्र की हो जाती है तो उन्हें इस धालो में भाग लेने में भाग लेने को नहीं मिलता। इस धालो के मांड पर महिलाएं धालो देखने तो आ सकती है मगर खेल नहीं सकती। उन्हे धालो खेलना माना है।

प्रसाद भी रखा जाता है, जो अंत में सबको बांटते है। लोगों को जैसे लगता है, वह उस प्रकार से प्रसाद रखते है। जैसे की चिरमुल्यो, पेटिस, तरबूजा, चाय पानी का इंतजाम करते है।

इस प्रकार से ही यहा के पुरुष ग्रामीण लोग ५ दिनों में धालोउत्सव मानते है।

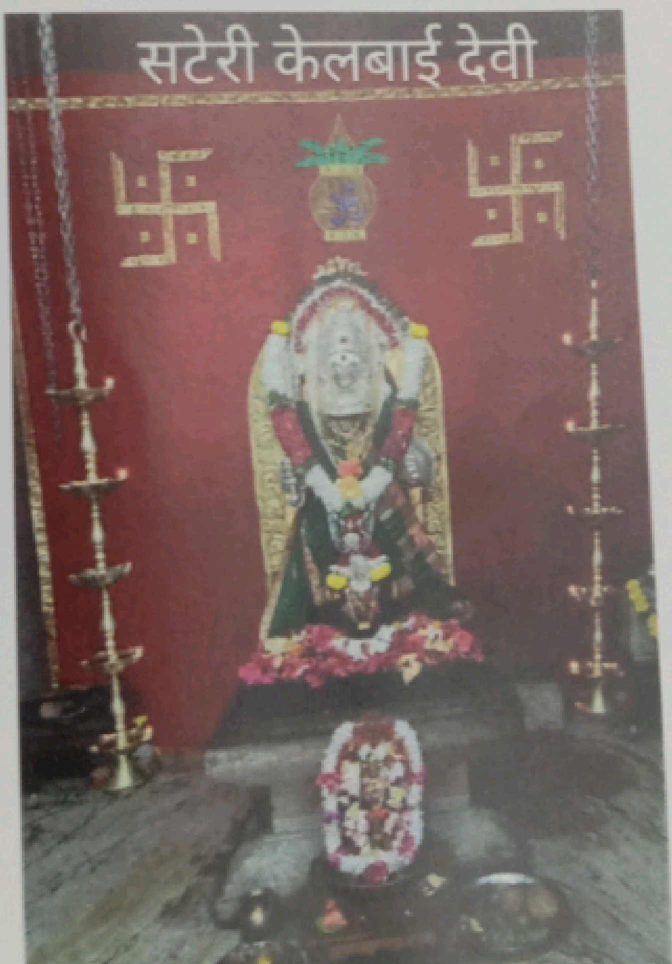

सातेरी
केळबाई

गांव की समस्याएं

मरीना बे प्रोजेक्ट: आम जनता के लिए खतरा

नवशें गांव में मुख्य रुप से मरीना बे प्रॉजेक्ट ही समस्या का विषय है। यह आगामी मरीना बे प्रोजेक्ट आम जनता के लिए किसी भी तरह से लाभकारी नहीं दिखाई देता है। यह उच्च-स्तरीय पर्यटन पर केंद्रित है, जिसका मतलब है कि इसका लाभ केवल अमीर लोग ही उठा पाएंगे। ऐसे प्रोजेक्ट यूरोपीय देशों में आम हैं, लेकिन भारत में भी केरल में एक समान प्रोजेक्ट मौजूद है।

प्रभावों का विश्लेषण: मरीना बे प्रोजेक्ट के प्रभावों

१. रोजगार और आजीविका पर प्रभाव:

मछली पकड़ने में बाधा: मरीना बे प्रोजेक्ट के कारण मछुआरों के नौकायन मार्ग बाधित होंगे, जिससे वे मछली पकड़ने के लिए समुद्र में नहीं जा पाएंगे। यह उनकी आजीविका का मुख्य स्रोत होने के कारण उनके लिए एक बड़ी समस्या होगी।

रोजगार के अवसरों में कमी:

मरीना प्रबंधन द्वारा रोजगार के अवसरों के वादे अतीत में झूठे साबित हुए हैं। 'आल्दिया दी गोवा' होटल में मछुआरों को दी गई सुरक्षा नौकरियों से उन्हें 3 साल के अंदर ही निकाल दिया गया था। इससे ग्रामीणों को डर है कि उन्हें मरीना बे प्रोजेक्ट में कोई स्थायी रोजगार नहीं मिलेगा।

सामाजिक-आर्थिक प्रभाव: मछली पकड़ना न केवल नवशें गांव के लोगों के लिए रोजगार का साधन है, बल्कि यह उनकी संस्कृति और सामाजिक ताने-बाने का भी एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। मरीना बे प्रोजेक्ट के कारण मछली पकड़ने की गतिविधियों में बाधा आने से गांव के लोगों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

पड़ोसी गांवों पर प्रभाव:

ओडशेल, दोना पॉल, ककरा, शिरदोना जैसे आसपास के गांव भी मछली पकड़ने और पर्यटन से प्रभावित होंगे। मरीना बे प्रोजेक्ट के कारण इन गांवों में भी मछुआरों की आजीविका और रोजगार के अवसरों पर खतरा मंडराएगा।

2. पर्यावरण पर प्रभाव:

पारिस्थितिकी तंत्र का विनाश:

"गोवा राज्य जैव विविधता बोर्ड" ने नवशें गांव को "पारिस्थितिक रूप से संवेदनशील क्षेत्र" घोषित किया है। यह क्षेत्र मछली प्रजनन और लुप्तप्राय प्रजातियों जैसे "विंडोपेन ऑयलस्टर" का आवास है।

अगर वहा के नवशें समंदर में ड्रेजिंग होगी तो, निर्माण गतिविधियों से जल प्रदूषण, समुद्री जीवन को नुकसान और पारिस्थितिकी तंत्र का विनाश होगा।

सरकारी संशोधनों का दुरुपयोग:

COVID-19 महामारी के दौरान, सरकार ने कथित तौर पर ३२ संशोधनों को मंजूरी दी, जिससे कंपनियों को अनुचित लाभ हुआ। इसी तरह के संशोधनों का उपयोग अतीत में अन्य स्थानों पर पर्यावरणीय क्षति के लिए किया गया है।

मरीना बे प्रोजेक्ट आम जनता और पर्यावरण के लिए गंभीर खतरा पैदा करता है। यह महत्वपूर्ण है कि सरकार और संबंधित अधिकारी इस परियोजना के नकारात्मक प्रभावों का गहन मूल्यांकन करें और समुदाय की चिंताओं को ध्यान में रखें।

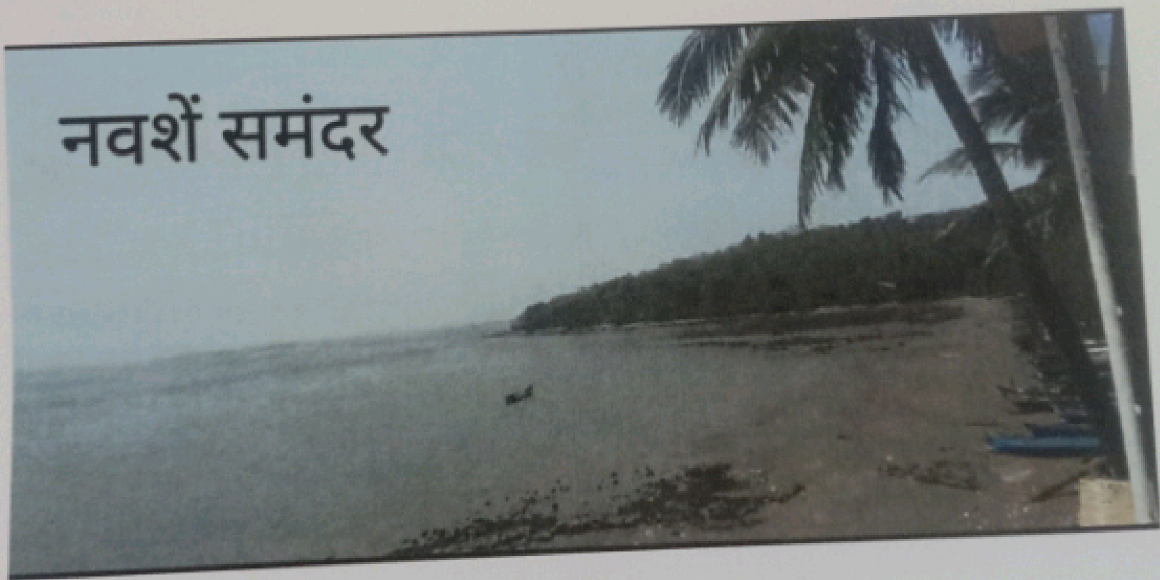

निष्कर्ष

इस प्रकार से हमने नवशें गांव का सर्वेक्षण पूरा किया इस सर्वेक्षण के माध्यम से इस गांव के समाज को जाना। उनकी संस्कृति से परिचित हु। उनकी समस्याओं से परिचित हुए गोवा के पारंपरिक लोक उत्सव जो की जागोर, धालो को जानने का मौका मिला। इस प्रकार यह सर्वेक्षण हमें बहुत कुछ सीख गया। इससे हमारे व्यक्तित्व में जो परिवर्तन आया है उसे हम अनुभव कर सकते हैं।